आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां | अंक : दसवां | फरवरी-2014

आ कृपाल गुरु 4

गुरु का हुक्म 5

परिवर्तन - 15

मेडिटेशन टाक 29

धन्य अजायब 34

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 फरवरी 2014 -143- **मूल्य - पाँच रुपये**

आ कृपाल गुरु मैं शगन

आ कृपाल गुरु मैं शगन मनौंदी हां,
के दर्शन दे जाओ मैं वास्ते पौंदी हां,

आओ सतगुरु जी मैं अरजां करदी हां,
तेरी संगत दा मैं पानी भरदी हां,
आ कृपाल गुरु .....

तेरी झलकी तों सूरज शरमौंदा ऐ,
तेरी महिमा दा कोई अंत ना पौंदा ऐ,
आ कृपाल गुरु .....

तेरे बचनां ते मैं आण खड़ो गई हां,
रख लै पत्त साईयां मैं तेरी हो गई हां,
आ कृपाल गुरु .....

भिच्छिया पांवीं तूं हैं परउपकारी वे,
खाली मोड़ी नां दर आए भिखारी वे,
आ कृपाल गुरु .....

तेरी संगत दा तूं आप सहारा हैं,
तेरे दर आया 'अजायब' विचारा है,
आ कृपाल गुरु .....

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु का हुक्म

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

मुंबई

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। आपकी दया-मेहर की वजह से ही हम इस कार्यक्रम को कर सकते हैं क्योंकि जिसे वह भुला दे वह याद नहीं कर सकता और जिसे अपनी भक्ति में लगा दे वह भक्ति छोड़ ही नहीं सकता।

उस करण-कारण परमात्मा के हाथ में ही हमारा जीवन और मौत है। वह जो चाहे कर सकता है। उसने हमारे ऊपर अपार दया की तभी हम उसकी भक्ति या यश कर रहे हैं।

प्यारेयो! सन्तमत में फायदा उठाने के लिए हमें सबसे पहले **गुरु का हुक्म** मानने की आदत डालनी चाहिए। दूसरा नम्रता है लेकिन यह नम्रता तभी आती है जब हम हुक्म मानना, आज्ञा का पालन करना सीख जाते हैं। सबसे पहले हुक्म मानने वाले को कोई भी सेवा मिले चाहे कोई भी प्रेमी उसे तन, मन और धन की सेवा के लिए कहे वह उस सेवा से फायदा उठाने की सोचता है। ऐसा प्रेमी, सेवक के हुक्म को भी **गुरु का हुक्म** समझता है। सेवक को गुरु ने ही कहा होता है कि तूने लंगर में सेवा करनी है, दरी बिछाने की सेवा करनी है। किसी ने अपनी तरफ से न दरी बिछानी होती है न पानी भरना होता है और न खाना बनाना होता है।

गुरु की वजह से ही सब कुछ होता है। सन्त-सतगुरुओं की वजह से ही साध-संगत इकट्ठी होती है। वह हमें हदीश समझनी चाहिए। सेवा की आदत जरूर होनी चाहिए। हमें पता है कि सतसंग

चाहे कनेडा, अमेरिका, कोलंबिया, मेक्सिको या हिन्दुस्तान में किसी भी जगह हो, कोई भी आदमी तनख्वाह नहीं लेता।

सारे ही प्रेमी गुरु की निस्वार्थ सेवा करते हैं। आप देखें! अगर हम सेवा करने वालों के साथ थोड़ा बहुत सहयोग कर देंगे तो हम भी उसमें गुरु की खुशी प्राप्त कर लेंगे। चाहे कोई तन, मन या धन की सेवा करे। हम मन की सेवा के चोर बनें क्योंकि अगर हम मन से सिमरन करेंगे तो जो प्रेमी रोज दरी बिछाते हैं लंगर तैयार करते हैं वे हमसे कुछ प्राप्त कर सकते हैं। जिनके जिम्मे गुरु ने धन की सेवा लगाई होती है अगर हम भजन करेंगे तो उनका धन पवित्र होगा। उन लोगों ने सहयोग दिया तभी हम यहाँ बैठकर भजन कर सके, सतसंग कर सके।

मैंने पिछले साल बगोटा कोलम्बिया में सतसंग दिया था, वहाँ के कई प्रेमी यहाँ भी बैठे हैं उन्होंने देखा था कि वहाँ बहुत ज्यादा प्रेमी थे, बहुत अच्छा इंतजाम था। सेवादारों ने दिल लगाकर लंगर की सेवा की। मैं रोजाना लंगर में जाता था सेवादारों का इंतजाम देखकर दिल गदगद हो जाता था कि वे रोज नया से नया खाना बनाते थे। आपको पता है कि सन्तों को संगत जान से ज्यादा प्यारी होती है। सन्त के बच्चों को अच्छा खाना मिले तो क्या वे अच्छा भजन नहीं करेंगे? सन्त अपने बच्चों को खाता हुआ देखकर खुश होते हैं, भजन करते हुए देखकर उससे भी ज्यादा खुश होते हैं।

परमात्मा कृपाल की दया से वहाँ हर इंतजाम बखूबी चला। किसी को यह नहीं पता था कि यह इंतजाम कौन कर रहा है, यहाँ किसका हुक्म चलता है? सबकी ड्यूटी लगी हुई थी सब अपनी-अपनी जगह मस्त थे। वहाँ बहुत से नये प्रेमी अमेरिका और भी कई देशों से आए हुए थे वे इतना इकट्ठ देखकर हैरान थे कि यहाँ

इतंजाम किस तरह होगा! वहाँ इकट्ठ की वजह से संगत को दर्शन नहीं हो रहे थे। सेवादारों ने वहाँ बहुत जल्दी टेलिविजन लगा दिए। जब भी कहीं प्रोग्राम होता है तो सेवा भी हमारे बीच में से ही लोग करते हैं। समय पर लंगर और सतसंग का इंतजाम बखूबी चला।

गुरु अर्जुनदेव जी के समय में माहणा जाट हुआ है। आजकल तो पाईप नलके लगे हुए हैं या पानी टैंकरो से आ जाता है। उस समय पानी सिर पर ही ढ़ोना पड़ता था। मैं अक्सर माहणा जाट की मिसाल दिया करता हूँ कि वह न भजन करता था न सतसंग की सेवा करता था अगर प्रेमीं उससे सेवा करने के लिए कहते कि तू सब्जी काट या लंगर की सेवा कर तो माहणा जाट उन सेवकों को बहुत गुस्से भरे लहजे से कहता, ''तुम तो मेरे शरीक गुरु भाई हो मैं तुम्हारा कहना क्यों मानूं? गुरु साहब मुझे जो सेवा करने के लिए कहेंगे मैं वही सेवा करूंगा।''

आपको पता है कि जो शिष्यों का कहना नहीं मानता उसका मन उसे बागी कर देता है। सेवादारों ने गुरु साहब से शिकायत की कि माहणा जाट न भजन करता है न ही कोई सेवा करता है, लंगर में खाना खाकर मौज से सोया रहता है अगर हम उससे सेवा के लिए कहते हैं तो वह हमसे झगड़ा करने लगता है।

गुरु साहब ने माहणा जाट को बुलाया तो उसने कहा कि आप जो सेवा कहें मैं करने के लिए तैयार हूँ। गुरु ऐसे शिष्यों का इम्तिहान भी ले लेता है कि देखूं! यह कहाँ तक आज्ञा का पालन करेगा? गुरु साहब ने कहा, ''तू बाहर जंगल में जाकर चिता बनाकर जल जा।'' माहणा जाट बाहर गया उसने लकड़ियां इकट्ठी कर ली आग भी लगा ली लेकिन आग में कूदने के लिए उसका दिल न करे वह उस आग के चारों तरफ चक्कर काटने लगा।

चोर चोरी करके आया था। चोर ने माहणा जाट से पूछा कि तू आग के चारों तरफ क्यों घूम रहा है? माहणा जाट ने अपनी सारी कहानी चोर को बताई। चोर ने माहणा जाट से कहा, ''तू **गुरु का हुक्म** मुझे दे दे और उसके बदले यह सारा धन ले ले।'' माहणा जाट ने सोचा! इससे सस्ता सौदा और क्या होगा? मैंने इसे सिर्फ कहना ही है। **गुरु का हुक्म** लेकर चोर आग में कूद गया। अर्जुनदेव जी महाराज ने चोर की संभाल की। वह जन्म-मौत के संकट से पार हो गया।

माहणा जाट धन लेकर खुशी-खुशी अपने घर आया। सोचता है कि अच्छी हवेली बनवाऊंगा, घरवाली के लिए अच्छे जेवर बनवाऊंगा। पुलिस पीछे लगी हुई थी। चोर वही है जिसके पास माल है। पुलिस ने माहणा जाट को पकड़ लिया। चोर ने बहुत बड़े घर का माल चुराया हुआ था और वहाँ कत्ल भी हो गया था। माहणा जाट को फाँसी दी गई। कहने का भाव मन हमें भजन से, **गुरु के हुक्म** से बागी कर देता है इसलिए हमें जो भी सेवा मिले वह सेवा नम्रता से करनी चाहिए।

महाराज सावन सिंह जी के समय में कई प्रेमी दिन-रात सेवा करते तो कई बिल्कुल सेवा नहीं करते थे। कई प्रेमीं महाराज सावन सिंह जी से शिकायत करते कि ऐसे प्रेमी भी हैं जो सेवा नहीं करते और हमें धमकाते भी हैं। महाराज सावन सिंह जी ने कहना, ''आप लोग अपनी सेवा करें आप लोगों ने उनसे क्या लेना है? उनका मन जबरदस्त है अगर आप उन्हें सेवा के लिए कहेंगे तो वे आपका विरोध करेंगे। ऐसे जीव सन्तमत में आकर क्या कमाते है वे लंगर में रोटियां खाकर इसकी-उसकी निन्दा चुगली करके खाली हाथ आते हैं और खाली हाथ ही चले जाते हैं।''

जनरल विक्रम सिंह हमारा कमांडर था। जनरल की पोस्ट बहुत बड़ी होती है। उसके आगे-पीछे वायरलेस होती है, साथ में दो-तीन गाड़ियां भी होती हैं। वह महाराज सावन सिंह का नामलेवा बहुत अच्छा सेवक था। वह लंगर में पानी की बाल्टियां भरकर सेवा किया करता था। वह कहता, ''मुझे इस घर से ही सब कुछ मिला है और आगे भी इसी घर से मिलेगा।''

पाणी पखा पीसु दास कै तब होहि निहालु।।
राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु।।

उस समय हिन्दुस्तान में मशीने नहीं थी। आटा चक्कियों से पीसकर तैयार किया जाता था। ऐसा महाराज सावन सिंह जी के समय में भी होता रहा है।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सेवा करते हुए आप यह मत देखें कि आप जरनल हैं या जज बेरिस्टर हैं। ये संसारी ओहदे आपके साथ नहीं जाएंगे। आपकी सेवा यहाँ-वहाँ सब जगह सहाई होगी। आप वह काम करें जो आखिरी समय में आपके काम आए, वह काम है गुरु की सेवा।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुरु नहीं भूखा तेरे धन का उनपे धन है भक्ति नाम का।
पर तेरा उपकार करावे भूखे प्यासे को दिलवावे।
उनकी मेहर मुफ्त तू पावें जो उनको प्रसन्न करावे।।

गुरु आपके तन, मन, धन किसी भी चीज का भूखा नहीं होता। उसे परमात्मा ने सब कुछ दिया होता है।

सन्त जना का छोहरा तिसु चरणी लागि।।
माइआधारी छत्रपति तिन्ह छोडउ तिआगि।।

अब आप कहते हैं, ''सन्तों का नामलेवा सेवक बेशक गरीब है बनिस्पत उसके जो सारी दुनिया का चक्रवती राजा है। दुनिया के तख्त-ताज उसके साथ नहीं जाएंगे।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कल्ला आया है कल्ला ही जाएगा।

परमात्मा गुरु तेरा तभी साथ देगा अगर तू गुरु के साथ प्यार करेगा, **गुरु के हुक्म** का पालन करेगा। आप किसी गरीब सतसंगी के घर जाएंगे तो उसके घर से आपको भजन की खुशबू आएगी। वह आपसे कहेगा कि मैं यहाँ पर भजन में बैठता हूँ, चलो! हम मिलकर भजन में बैठें। मैं जब बड़े से बड़े आदमी से मिलने जाता हूँ तो पप्पू और गुरमेल मेरे साथ होते हैं। उस समय वह अपने ही रोने रोता है, भजन की कोई बात ही नहीं करता।

सन्तन का दाना रूखा सो सरब निधान।
गृहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान।।

आप कहते हैं, ''सन्तों के पास जाकर कई दिनों की सूखी रोटी मिल जाए तो उसमें भी रस है उसे खाकर सारी रात भजन करेंगे मालिक को याद करेंगे। दूसरी तरफ राजा के घर का छत्तीस तरह का भोजन भी जहर की तरह है। ऐसे खाने खाकर आपको अच्छे ख्याल नहीं आएगे, आप भजन में नहीं जुड़ सकेंगे।''

कृष्ण भगवान द्वापर युग के आखिर में हुए हैं। कौरव-पांडव चाचा-ताऊ के लड़के थे, वे हिन्दुस्तान के राजा थे। जब उनका विवाद हुआ तो कृष्ण सुलह करवाने के लिए उनकी राजधानी हस्तिनापुर गए जिसे आज दिल्ली कहते हैं।

महाभारत पढ़ने से पता लगता है कि दुर्योधन ने बहुत इंतजाम किया कृष्ण के लिए अच्छे खाने बनवाए लेकिन कृष्ण भगवान रात

को अपने प्यारे विदुर गरीब के घर चले गए। जब सुबह सुलह करवाने के लिए सारे कचहरी में मिले तो दुर्योधन को रात के क्रोध का पारा चढ़ा हुआ था कि मुझ राजा का अपमान हो गया कृष्ण मेरे घर नहीं आए और विदुर के घर चले गए। दुर्योधन ने कृष्ण से कहा, ''वहाँ तूने अच्छी पूरी कचौरी हलवे खाए होंगे, अच्छे पलंग पर सोया होगा, तुझे वहाँ क्या मिला?''

कृष्ण भगवान ने विदुर के घर जो साग खाया उसमें नमक नहीं था। उस समय कृष्ण भगवान ने दुर्योधन को जो जवाब दिया उसे भक्त नामदेव ने अपनी बानी में इस तरह लिखा हैः

खीर समान साग में खाया गुण गावत रैण बिहाणी।
नामे का स्वामी आनन्द विरोधी जात न काहूँ की जानी।।

कृष्ण कहते हैं कि मुझे साग खाकर खीर पूरियों से भी ज्यादा स्वाद आया। मैं सारी रात भजन में जुड़ा रहा। हमारे लिए न अमीर बुरा है न गरीब बुरा है। हम तो प्यार, मौहब्बत और तड़प देखते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''गरीब साधु और नाम वाले के घर अगर आपको सूखे टुकड़े मिल जाएं वह लाख दर्जे अच्छे हैं उन्हें खाकर आप भजन करेंगे। साकत परमात्मा को याद नहीं करता। उसके यहाँ आपको छत्तीस प्रकार का भोजन मिले वह जहर की तरह है क्योंकि उसका भोजन खाकर आपके अंदर विषय-विकारों की जहर ही पैदा होगी।''

भगत जन्हा का लूगरा ओढि नगन न होई।
साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''अगर सन्त-महात्मा हमें अपने हाथ से फटा हुआ कपड़ा भी दे दें तो वह आम राजा-

महाराजा के ईनाम से या हमारी इज्जत के लिए दिए गए सिरोपा वगैरहा से भी अच्छा है। आप जब सन्तों के हाथ का दिया हुआ कपड़ा देखेंगे तो आपको भजन याद आएगा, गुरु का स्वरूप याद आएगा; आपका ख्याल नाम की तरफ चला जाएगा कि आपको यह कपड़ा किसने दिया है।''

सिरोपे पहनकर दिल में अहंकार आ जाता है कि हम कितने कला वाले थे कि हमें दौड़ में यह कप, यह ट्राफी मिली है। मैं दौड़ में रहा हूँ हमें इस तरह के कई कप और ट्राफियां वगैरहा मिलते थे। मुझे पता है कि दिल में कितना अहंकार होता था, जब तक ऐसे कप, ट्राफियां मैंने अपने पास रखे तब तक दिल में अहंकार ही था। आखिर महाराज कृपाल के दया से इन्हें आँखो से दूर किया।

मुझे दो बार दौड़ में इंग्लैंड जाने का मौका मिला है। हमें बनियाने मिलती थी जिन पर बड़े अक्षरों में इंडिया लिखा होता था। जब हम हिन्दुस्तान में आकर वे बनियान पहनते तो हर एक अंगुली करता कि यह खेलों में इंग्लैंड गया था अगर अहंकार न हो तो देखने वाले कर देते थे। अब महाराज जी की राख भी संभालकर रखी हुई है। जिस चादर के ऊपर महाराज सावन सिंह जी या महाराज कृपाल सिंह जी बैठे थे वे कपड़े भी संभालकर रखे हुए हैं। महाराज जी की निशानियां देखकर परमात्मा कृपाल याद आते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी अपना जातिय तजुर्बा बयान करते हैं अगर कोई महात्मा खुश होकर हमें फटा हुआ कपड़ा भी देता है तो वह परमात्मा की याद दिलाएगा, हमें उस कपड़े की कद्र करनी चाहिए।

साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध बीचहु टूटै।
हरिजन की सेवा जो करे इत ऊतहि छूटै।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं अगर हम साकत के साथ दोस्ती करेंगे, प्यार रखेंगे तो उसकी सोहबत इस दुनिया में ही छूट जाएगी अगर दस-बीस साल थोड़ा बहुत प्यार रख भी लेंगे तो मौत के समय वह हमें छोड़ देगा या हम उसे छोड़कर चले जाएंगे।

हमने गुरु की जो सेवा की है, नाम जपा है उससे हम यहाँ भी सुरखरू हैं। हमारे मन को शान्ति आएगी वह सेवा आगे जाकर भी हमारी सहायता करेगी; दरगाह में उसी चीज ने साथ जाना है।

सभ किछु तुम्ह ही ते होआ आपि बणत बणाई ।।
दरसनु भेटत साध का नानक गुण गाई ।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज परमात्मा की बड़ाई करते हैं कि सब कुछ तेरे हाथ में है। गुरु और शिष्य का खेल तूने खुद ही बनाया है। तू सेवा करने के लिए सेवादार बन जाता है। सेवादार में भी तू है जिसकी सेवा करते हैं उसमें भी तू हैं। तू ही बर्तन परोसता है, तू ही खाता है। तू ही दरी बिछाता और इकट्ठी करता है। तू आप ही संगत को विदा करता है और आप ही कहता है कि भंडारे भरपूर रहें, संगत इसी तरह खाती रहे।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''आप संगत में जाएंगे साधु के दर्शन करने से आपको भी परमात्मा याद आ जाएगा। आप भी भूल-भटके परमात्मा की भक्ति में बैठने लग जाएंगे। कुछ तो हम साधुओं के वचन सुनकर अपनी गलतियां, भूल सुधार लेते हैं। साधु का दर्शन हमारे पाप काटता है जिसका कोई लेखा ही नहीं है।'' कबीर साहब कहते हैं:

कबीरा संगत साध की साहिब आवे याद।
लेखे में सोई घड़ी बाकी के दिन बाद।।

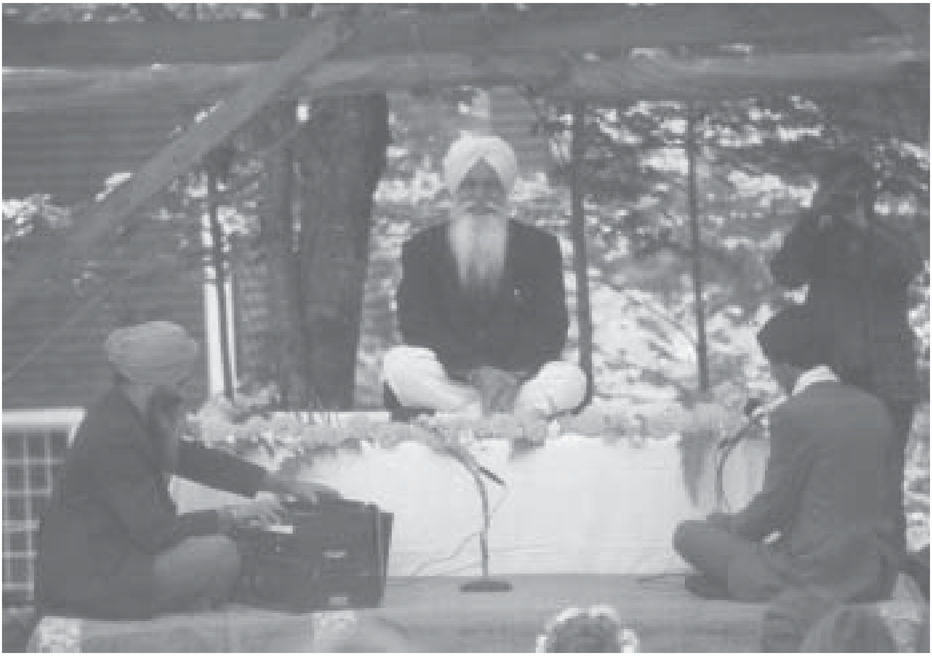

साधु के दर्शन से साहब याद आता है। जितने दिन हमने संगत कर ली बैठकर दर्शन कर लिए वह हमारे लेखे में हैं। बाकी जो कुछ भी हम दुनिया में फिरते हैं करते हैं लोगों को देखते हैं वह किसी भी लेखे में नहीं है।

सन्त की गैल न छोड़िए मार्ग लगया जाए।
पेखत ही पुनीत होए भेटत जपिए नाम।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने हमें सेवा, भक्ति और **गुरु के हुक्म** को मानने के मुत्तलिक समझाया है। हमें चाहिए कि हम अपने जीवन को सफल बनाएं। परमात्मा जितना समय हमें किसी भी कार्यक्रम में जाने का मौका देता है उससे पूरा-पूरा फायदा उठाएं, सोकर वक्त न गुजारें।

***

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

परिवर्तन

दिसम्बर 1972 साऊथ फ्लोरिडा

प्यारे भाईयो और बहनों! लोग शान्ति के लिए चिल्ला रहे हैं कि हमें यह शान्ति कहाँ से मिलेगी? शान्ति हमें हमारे हृदय से मिलेगी। हमें शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए, हमें शान्ति का संदेश फैलाना चाहिए।

दुनिया बदल रही है। यह परिवर्तन शारीरिक न होकर मन की बुरी प्रवृति के खिलाफ होना चाहिए जो हमें परमात्मा से दूर रखती है। हमें शान्ति तभी मिल सकती है जब हम लोगों को शान्ति का सही तरीका समझाएं। सही विचार, सही बातें और अंत में सही कर्म से ही सब कुछ सही समझ आने लगता है।

यह संसार अपने आप नहीं बना। वैज्ञानिकों ने परिणाम निकाला है कि इस सृष्टि का नियंत्रण किसी शक्ति के हाथ में है जो सचेत है। इस दुनिया का नियंत्रण उसी के हाथ में है।

पूरे संसार की रचना परमात्मा द्वारा की गई है। क्या पूर्व, क्या पश्चिम, धरती और आकाश सब परमात्मा की रचना है। एक बार गुरु नानकदेव जी मक्का गए। एक रात आप अपने पैर काबा (परमात्मा का घर) की ओर करके लेट गए। वहाँ के धार्मिक व्यक्ति ने आपको डाँटकर कहा, ''आप परमात्मा के घर की तरफ पैर करके क्यों लेटे हैं?'' गुरु नानकदेव जी ने उसे प्यार से कहा, ''प्यारे मित्र! मैं सभी ओर परमात्मा को देख रहा हूँ, ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ पर परमात्मा नहीं है। तुम मेरे पैर उस तरफ कर दो जहाँ परमात्मा नहीं है।''

सबसे पहले समझने वाली बात यह है कि वह जगह पूजा के काबिल हैं जहाँ पर झुककर परमात्मा की भक्ति की जाती है। एक मुस्लिम सन्त का कहना है कि यह सारी धरती परमात्मा की है। जब मेरे शिष्यों को परमात्मा के आगे प्रार्थना करने का समय मिले तो वे इस धरती पर कहीं भी बैठकर प्रार्थना कर सकते हैं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनका मुँह किस तरफ है। कुरान में भी कहा गया है कि परमात्मा सब जगह है। आप पूर्व, पश्चिम किसी भी तरफ अपना मुँह करके प्रार्थना कर सकते हैं।

सबसे पहले समझने वाली बात यह है कि हम उसमें हैं, वह हममें है। वह हमारे ऊपर और नीचे भी है। जैसे मछली पानी में रहती है वैसे ही हमारा अस्तित्व उसमें है। परमात्मा ने सभी को एक जैसे अधिकार दिए है कोई ज्यादा या कम नहीं, कोई पूर्व या पश्चिम नहीं। सब एक ही तरह से पैदा होते हैं कोई ऊँचा या नीचा नहीं है। सभी को एक ही प्रकार की बाहरी सुविधाएं दी गई हैं जैसे आँख, कान आदि। परमात्मा हमारे हृदय में रहता है और वे सभी जगह पूजा के काबिल हैं जहाँ हम झुककर प्रार्थना करते हैं।

जब मैं पिछली बार यहाँ आया था तो पूर्व और पश्चिम के लोगों ने सभा आयोजित की थी। जो अमेरिका से इस सभा मे सम्मिलित हुए थे मैं भी उनमें से एक था। उस सभा में सबने बताया कि वे कहाँ से आए हैं। जब मेरी बारी आई तो मैंने कहा, ''ऐसा कहा जाता है कि पूर्व पूर्व है और पश्चिम पश्चिम है, इन दोनों का कभी मिलन नहीं हो सकता लेकिन सच यह है कि कोई पूर्व या पश्चिम नहीं यह सारी सृष्टि उस परमपिता परमेश्वर का घर है। सभी देश उस घर के कमरे हैं, हमने अपनी समझ के अनुसार ये चीज़ें बनाई हैं।''

अगर आप यह समझ जाएं तो आपके देखने का नज़रिया ही बदल जाएगा। आप जान जाएंगे कि हम उस पिता परमेश्वर के बच्चे हैं जो सभी का पिता है। परमात्मा का सच्चा पितृभाव और इंसान का भ्रातभाव एक साथ जुड़ जाएंगे तो मैं इसी को परमात्मा का पवित्र परिवर्तन कहूँगा।

भगवान कृष्ण कहते हैं, ''जो सबमें मुझे देखता है वह मुझे प्यारा है।'' जब गुरु आता है तो वह यही संदेश लेकर आता है कि परमात्मा यहीं है और हमने परमात्मा को देखा है लेकिन कौन सी आँख से परमात्मा को देखा है? परमात्मा को देखने वाली आँख सबमें होती है वह आँख बाहरी आँख से अलग होती है उसे तीसरा नेत्र कहते हैं। परमात्मा स्पष्ट रूप से प्रकट है और सबके हृदय में रहता है। हमारा यह शरीर ही परमात्मा का असली मंदिर है अगर हम इस बात को समझ लें तो हमारे अंदर सही विचार आएंगे और हम सही कर्म करेंगे।

हम सबने अलग-अलग धर्मों के चोले ओढ़ रखे हैं फिर भी हम सब एक हैं। सभी धर्मों की आखिरी मंजिल परमात्मा को जानना है। परमात्मा को जानने के लिए पहले खुद को जानना जरूरी है। परमात्मा को बाहरी शक्तियों- मन और ज्ञान से नहीं पहचाना जा सकता, केवल आत्मा ही परमात्मा को पहचान सकती है। परमात्मा एक है जबकि भक्ति करने के बहुत से बाहरी तरीके हैं पर आखिरी और अंदरुनी तरीका सबके लिए एक जैसा है।

एक मुस्लिम सन्त रजाब का कहना है, ''धनुर्धारी बहुत हो सकते हैं पर मंजिल एक है।'' कोई धार्मिक गुरु ही हमें अंदरुनी रास्ते का प्रमाण दिखा सकता है जिससे हमें सच्ची शान्ति और सही समझ मिल सके। कोई भी नेता इस दुनिया में शान्ति, एकता

और आपसी सहयोग नहीं ला सका अगर वे धार्मिक गुरु के साथ एकता और आपसी सहयोग के साथ काम करें तो शान्ति बहुत जल्द ही हासिल हो जाएगी।

गुरु को बचपन से ही परमात्मा के बारे में ज्ञान होता है। गुरु नानकदेव जी को स्कूल भेजा गया ताकि वे शिक्षा प्राप्त कर सकें। शिक्षक ने शिक्षा देनी शुरू की और कहा, ''एक, दो---।'' शिक्षक आगे बढ़ता गया पर गुरु नानक जी बोले, ''ठहरो! आपका एक से क्या मतलब है?'' गुरु नानक जी को ज्ञान था फिर आप बोले, ''इस एक का मतलब यहाँ एक भगवान है। वह अनन्त है और वह सारी रचना का रचयिता है, उसका किसी से वैर नहीं उसे किसी से डर नहीं। वह खुद बनकर आया उसे बनाने वाला कोई नहीं।''

तब शिक्षक ने गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''यह कैसे हो सकता है?'' आपने कहा, ''गुरु की दया से यह गुरु का दिया हुआ उपहार है। मैं यह कहता हूं कि परमात्मा एक है क्योंकि ऐसा अनुभव गुरु ही दे सकता है और वह सिद्ध कर सकता है कि परमात्मा एक है। बाहरी बंधनों को जलाकर उसकी राख से स्याही बनाओ और खुद अपने ज्ञान से परमात्मा की तारीफें लिखते जाओ। जब हम अपने आपको खुद के ज्ञान से जानेंगे तो हम देख सकेंगे कि हम क्या है?''

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर मैं एक कहता हूँ तो दो का प्रश्न पैदा होता है। वह 'शब्द' से पहचाना जाता है जिसका अनुभव किया जा सकता है लेकिन शब्दों में ब्यान नहीं किया जा सकता।''

गुरु अर्जुनदेव जी हमें इसका कारण बताते हैं कि हम परमात्मा को एक क्यों कहते हैं क्योंकि हम सीमित हैं। हे परमात्मा! आप

अनन्त हैं। कोई भी पूर्ण परमात्मा को देख नहीं सकता। पूर्ण परमात्मा नाम है शब्द है।

हर इंसान के अंदर एक गुप्त कोठरी है। यह कोठरी मन और दिमाग से ऊपर है, इस कोठरी में परमात्मा का राज्य है। जब हम सन्तों के पास आते हैं तो वे हमारा ध्यान बाहर से हटाकर इस कोठरी को खोल देते हैं। मौहम्मद साहब ने कहा है, ''खुदा का नूर इंसान के मंदिर में है।'' समय-समय पर सन्त संसार में आते हैं और हमें समझाते हैं।

भगवान कृष्ण ने कहा है, ''मैं तुम्हें दिव्य प्रकाश दूंगा जिससे तुम मेरी शान देख सकोगे।'' महात्मा बुद्ध ने भी यही कहा है, ''हर इंसान के पास एक चमकीला शीशा होता है।'' बुद्ध के मानने वालों ने यह महसूस किया है।

बसन्त का समय आ रहा है और भी पहुँचे हुए सन्त आएंगे। परमात्मा की दया से हमें उनकी सोहबत का मौका मिलेगा। पहले एक लम्बे समय तक शिष्य की परिक्षा लेने के बाद ये चीजें उसके कानों में बताई जाती थी लेकिन अब ये चीजें बिना किसी भेदभाव के खुलेआम दी जाती हैं। सन्त-महात्माओं ने इंसानी रूप में जन्म लिया क्योंकि हम इंसानी जामें में ही परमात्मा को जान सकते हैं।

परमात्मा जब चाहता है प्रकट होता है। परमात्मा प्रकाश और ध्वनि है। परमात्मा सारी रचना का रचयिता है और रचना का नियंत्रण भी परमात्मा के हाथ में है। बाईबल में कहा गया है कि शुरूआत में शब्द था और शब्द परमात्मा के साथ था। वेदों में भी यही कहा गया है कि शुरुआत में प्रजापति था, उसके साथ शब्द था और वह शब्द वास्तव में परम श्रेष्ठ ब्रह्मा था। प्रजापति शब्द परमात्मा

के लिए इस्तेमाल किया गया है। गुरु नानकदेव जी और सभी सन्तों ने हमें बताया है कि इस सारे संसार का रचयिता नाम ही है। ऐसे बहुत से और उत्तम नाम हैं जो नाम की शक्ति का वर्णन करते हैं। दोनो के बीच कुछ ऐसे शब्द है जो उस शक्ति को बताते हैं। वह शक्ति सारी रचना का कारण है और जिसका बाहरी वर्णन प्रकाश और ध्वनि है।

सिक्खों के नौंवे गुरु गुरु तेग बहादुर से पूछा, ‘‘वह नाम क्या है जिसकी याद से निर्वाण पहुँचा जा सकता है? जिसे दोहराने से इंसान दुनिया की सोच को पार कर जाता है?’’ गुरु तेगबहादुर जी ने कहा, ‘‘नाम में परमात्मा की शक्ति का वर्णन है जिसका बाहरी वर्णन प्रकाश और ध्वनि है। इस शक्ति का वर्णन करने के लिए हजारों की संख्या में सन्तों द्वारा नाम दिए गए हैं। नाम के संपर्क में आना केवल इंसानी जामें में ही मुमकिन है।’’

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ‘‘नाम का संपर्क खुद को प्रकाशित कर देता है। वह प्रकाश करोड़ो सूरज के बराबर होता है। मैं यह बताने के लिए उदाहरण दे रहा हूँ कि असल में गुरु का क्या मतलब है?’’ हम राम कहते हैं, राम का मतलब है सबमे रमना।

परमात्मा की दया से ही सच्चा शिष्य प्रार्थना करता है, ‘‘हे परमात्मा! मेरे अंदर पवित्र नाम का प्रकाश प्रकट कर दो।’’

कबीर ने कहा है, ‘‘नाम ही मुक्तिदाता है। कोई अतुल्य आत्मा ही इस नाम को जान सकती है और सिद्ध कर सकती है। उस शक्ति को अंदररूनी आँखों से देखा जा सकता है, वह नाम हर इंसान में विद्यमान है लेकिन किसी गुरु की दया से ही हम उस नाम को अंदर खोल सकते है।’’

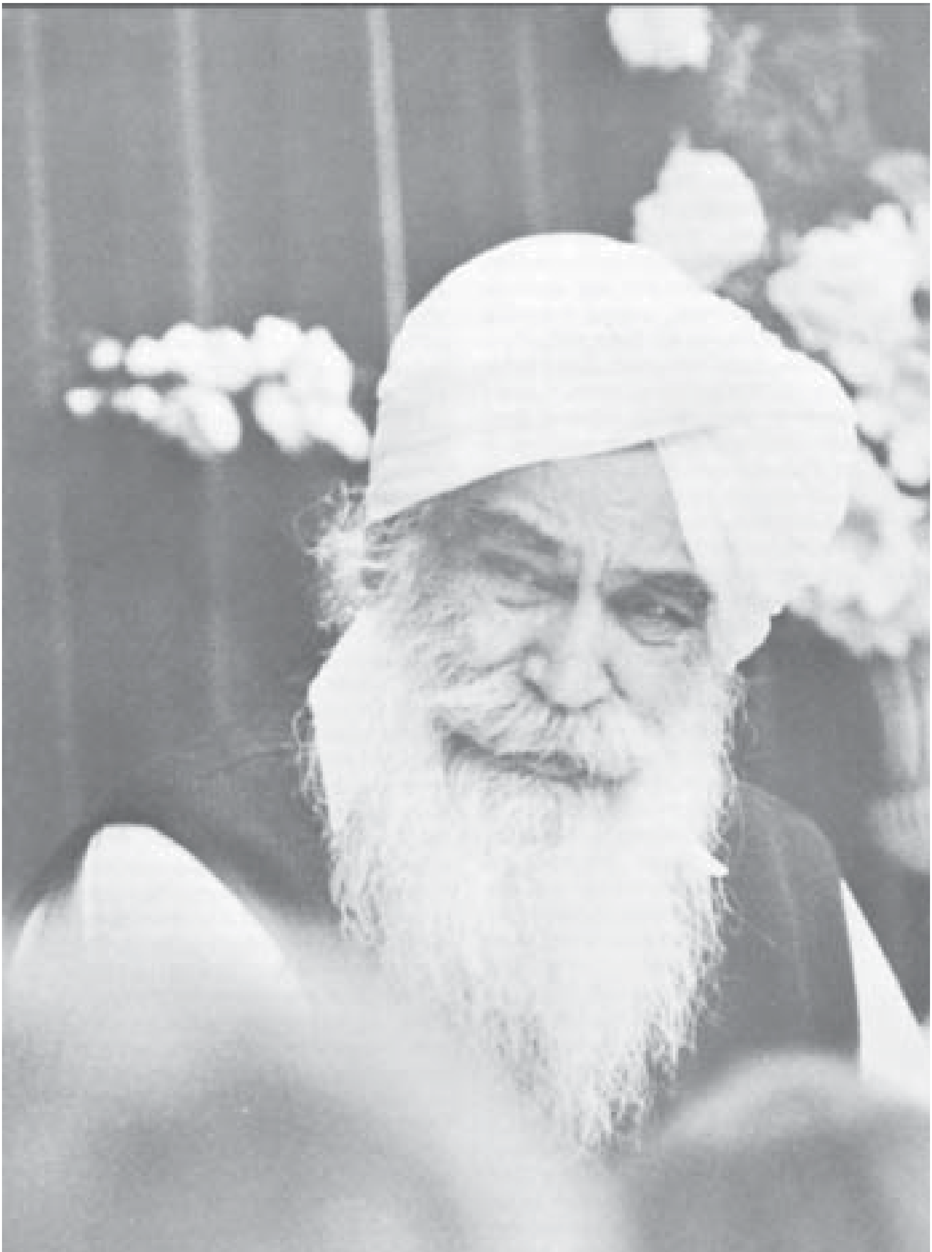

पानी एक तरल पदार्थ है इसे अंग्रेजी में वाटर, हिन्दी में जल या नीर और उर्दू में पानी कहते हैं। ये सारे शब्द उस तरल पदार्थ का वर्णन करते हैं जिसे पीने से आप अपनी प्यास बुझाते हैं। परमात्मा की शक्ति का वर्णन शब्द, नाम या कलमा है। गुरु हमारी अंदरूनी आँखों को खोलते हैं फिर हम शरीर में से कुछ हद तक ऊपर उठकर बाहर जाने वाली शक्तियों को देखना शुरू कर देते हैं। नाम के प्रति समर्पण ही असली पूजा है। आत्मा ही परमात्मा है। हम आत्मा से ही परमात्मा की आराधना कर सकते हैं।

गुरु अमरदास जी ने कहा है, ''हर कोई पूजा आराधना करता है लेकिन इन्द्रियों के वश होकर उन्हें ऐसा कोई परिणाम नहीं मिलता जिससे मुक्ति मिले। नाम में समा जाना मन को पवित्र करना है। हम जिस शरीर में रहते हैं यह परमात्मा का सुच्चा-सच्चा मंदिर है, वह शक्ति हमारे शरीर में है।''

अब सवाल उठता है कि हम परमात्मा को देख क्यों नहीं सकते? सन्त कहते हैं कि हम परमात्मा को देख सकते हैं तो आप परमात्मा को क्यों नहीं देख सकते? सन्त कहते हैं कि वह सूक्ष्म से भी सूक्ष्म अलख अगम है। जैसे हवा हमें दिखती नहीं लेकिन हम उसे महसूस करते हैं। आप माईक्रोस्कोप से देखें तो आप महसूस करेंगे कि वायुमंडल सूक्ष्म जीवों से भरा पड़ा है अगर आपकी आँख उसी तरह सूक्ष्म हो जाए तो आप उसे देख पाएंगे।

तुलसी साहब कहते हैं, ''हम अंधे हैं। हमें ऐसी निर्जीव जिंदगी पर धिक्कार है। वह परमात्मा हमारे अंदर है फिर भी हम उसे देख नहीं रहे।'' कबीर साहब कहते हैं, ''यह सारी दुनिया अंधे की तरह अंधेरे में खोज रही है अगर एक या दो का प्रश्न होता तो उसे ठीक किया जा सकता था। मैं जहाँ भी देखता हूँ मुझे आध्यात्मिक

तौर पर सब अंधे ही दिखाई देते हैं।'' गुरु अंदर की आँख को खोल देता है। जब तक कोई पूर्ण गुरु से नहीं मिलता वह देख नहीं सकता। जब वह गुरु के चरणों में आता है तो उसे दिखाई देना शुरू हो जाता है। गुरु के पास आने से पहले हम मरे हुए थे जब गुरु हमें बिठाता है तो हम जिन्दा हो जाते हैं। जब हम गुरु के पास आए तो हम आध्यात्मिक बहरे थे जब गुरु ने हमें बिठाया तो हमें ध्वनि सुनाई देनी शुरू हो गई। ज्ञान, अन्तर्ज्ञान और विवेक कुछ हद तक सच्चाई समझने में मदद करते हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि अंधे को दरवाजे का पता नहीं। यीशू इसी बारे में बताते हैं कि आप इसे खटखटाइये यह खुलेगा। जो भी मेरी आवाज सुन रहा है मैं उसके साथ रम जाऊंगा और वह मेरे साथ रम जाएगा।

कबीर साहब कहते हैं कि मैं जब मक्का जा रहा था, रास्ते में मुझे परमात्मा मिला। परमात्मा ने मुझे डाँटकर कहा, ''ओ कबीर! तुमसे किसने कहा है कि मैं यहाँ रहता हूँ, क्या मैं तुम्हारे अंदर नहीं हूँ, तुम यहाँ क्यों आ रहे हो?'' हम इस शरीर को छोड़कर परमात्मा को बाहर ढूंढ रहे हैं तो क्या हम कभी उसे ढूंढ पाएंगे? तीर्थस्थल, धार्मिक मंदिर हमें याद दिलाते हैं कि यहाँ कुछ है।

गुरु नानकदेव जी ने बहुत ही सरल प्रश्न रखा है कि क्या हम परमात्मा को देख सकते हैं? हाँ! परमात्मा सब जगह फैला हुआ है। गुरु वही कहते हैं जो वे देखते हैं। वेद कहते हैं कि परमात्मा आपके इतने नजदीक है कि दुनिया की कोई चीज आपके इतनी नजदीक नहीं, परमात्मा आपकी जिदंगी है।

कबीर साहब कहते हैं कि एक बार में दुविधा में था। जब मेरी आँख खुली तो मेरा सारा भ्रम चला गया, मैंने उसे सब जगह देखा।

गुरु कहता है कि मैं देने के लिए आया हूँ। यह परमात्मा का उपहार है मुफ्त में ले लें। क्या आपको सूर्य के प्रकाश या हवा के लिए पैसे देने पड़ते हैं? गुरु देने के लिए आते हैं लेने के लिए नहीं आते; वे अपने पैरों पर खड़े होते हैं। शम्स तबरेज कहते हैं कि आपका प्यारा आपके अंदर है। आपको अपनी आँखो से उसे देखने योग्य होना चाहिए और उसकी आवाज को अपने अंदरूनी कानों से सुनने के योग्य होना चाहिए।

अब प्रश्न आता है कि हम अपनी वह आँख कैसे खोलें जिससे वह हमें दिखाई दे? जब आप अपनी आँखे बंद करते हैं तो अंधेरा हो जाता है आप उसमें प्रवेश करके देखें आप अपनी सारी तवज्जो उसमें डालकर देखें यही दरवाजे को खटखटाना है और दरवाजा खुलेगा। आप सीधा उसमें देखते जाएं आपको प्रकाश दिखाई देगा।

तुलसी साहब, शम्स तबरेज सब एक ही बात कहते हैं कि भजन में बैठ जाएं। तुलसी साहब कहते हैं, ''आप इस अंधकार में प्रवेश करने के लिए गुरु के चरणों में बैठ जाएं वह आपको उठाएगा और आप प्रकाश देखेंगे। जब तक इंसान इन्द्रियों के जीवन से ऊपर नही उठता, तब तक उसका अंदर का रास्ता नहीं खुलता।''

इसलिए कहा गया है कि हे इंसान! खुद को जान कि तू कौन है? हमारे पास ध्यान है। जब ध्यान बाहर से हटाकर खुद के अंदर एकाग्र होते हैं वहाँ आपको प्रकाश दिखाई देता है तो हम उस प्रकाश को क्यों नहीं देखते? छोटी-छोटी लहरें हमारे मन के अर्धसचेत जलाशय से उठती हैं। जब तक ये लहरें स्थिर नहीं हो जाती तब तक आप उसे नहीं देख सकते। यह इस तरह है जैसे तालाब घास से ढ़का हो अगर आप थोड़ा-थोड़ा करके घास निकाल देंगे तो आप तालाब के पानी में अपना चेहरा देख सकेंगे। वह घास आपका

शरीर है, यह शरीर ही सारे मोह की शुरूआत है। हमारे पास शरीर है और हम शरीर के हिसाब से ही काम करते हैं। जीवन के हर मिनट यह शरीर बदलता है क्योंकि यह माँस का बना हुआ है। आस-पास की दुनिया बदल रही है क्योंकि यह दुनिया भी धन-पदार्थ की बनी है। यह दृष्टि का छल है और इस छल से बाहर आने का वर्णन गुरु करता है।

सारे गुरु कहते हैं कि इस शरीर की जागरूकता से ऊपर उठें। मरना सीखें जिससे आप दोबारा जीना शुरू कर सके। अपने ध्यान को बाहर से हटाकर आत्मा की गद्दी पर आएं इसे ही भजन-सिमरन कहते हैं। भजन-सिमरन ही परमात्मा के पास वापिस जाने का रास्ता है जो केवल इंसानी जामें में ही मुमकिन है। सभी देवी-देवता इस इंसानी जामें को तरसते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''हे इंसान! जब तुमने परमात्मा को ही नहीं जाना तो तुम किस बात का अहंकार करते हो?'' तुम्हारा बड़प्पन इसी बात में है कि तुम परमात्मा को देख सकते हो। जब इंसान की सारी कोशिशें असफल हो जाती है तो प्रार्थना सफल होती है। हम परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हैं कि हम असहाय हैं। हम इंसानी जामें की जेल में फँस गए हैं। आप हमारे लिए किसी को भेजें जो हमें इस इंसानी जामें से बाहर निकाले।

किसी ने गुरु अमरदेव जी से पूछा कि बाहरी शक्तियां कौन सी है?'' आपने कहा, ''बैठें और देखें कि बाहरी शक्तियां किस तरह काम करती हैं। जब हमारा ध्यान बाहर से हटता है तो हमारा शरीर व्यवहारिक कार्यों के लिए मर जाता है। जब आप स्थूल शरीर से ऊपर उठते हैं तो आपको परमात्मा का प्रकाश दिखाई देता है। अगर आप परमात्मा को देखना चाहते हैं तो आप किसी

ऐसे के पास जाएं जिसने परमात्मा को देखा है, जिसने परमात्मा को नहीं देखा वह आपको परमात्मा कैसे दिखा देगा।''

गुरु क्या है? जिसने इंसान के शरीर में परमात्मा को प्रकट किया हो। गुरु का मतलब है कि अंधकार से प्रकाश फूटकर बाहर आता है। शुरूआत करने के लिए गुरु आपको कुछ देते हैं।

ब्यास में एक इसाई धर्म का व्यक्ति था। उसने हमारे गुरु महाराज सावन सिंह जी से पूछा, ''आपका गुरु बड़ा है या यीशू बड़ा है?'' हमारे गुरु महाराज ने उसे प्यार से उत्तर दिया, ''मैंने अपने गुरु को देखा है, यीशू को नहीं देखा अगर तुम यीशू को मेरे सामने ले आओ तो मैं उससे भी मिल लूंगा।'' गुरु शरीर छोड़ जाते हैं लेकिन वह शक्ति चलती रहती है। भूखे के लिए रोटी और प्यासे के लिए पानी यह मांग और पूर्ति का नियम है। जो बच्चा हजारों साल पहले पैदा हुआ था या अब पैदा हुआ है परमात्मा ने उसके जन्म से पहले ही उसके दूध की व्यवस्था माता में कर दी थी।

सच्चाई सबसे ऊपर है और सच्चा जीवन सच्चाई से भी ऊपर है। हम सब परमात्मा के बनाए हुए भाई-बहन हैं। सारे ज्ञान के सागर की बूंदे हैं। कोई ऊँचा या नीचा नहीं। हम जिस शक्ति की पूजा करते हैं वह हमारे शरीर को नियंत्रित करती है। किसी से नफरत न करें कि आप ऊँची पदवी के इंसान हैं, ज्ञानी हैं या अमीर हैं। हम सब बराबर हैं कोई मेज पर खड़े हैं तो कोई कुर्सी पर बैठे हैं यह सब पिछले कर्मों का लेखा-जोखा है।

अपने विचारों को शुद्ध करें। बुरे विचार पूरे शरीर को गंदा कर देते हैं। जो शरीर कूड़े-करकट से भरा है क्या आप उस शरीर में परमात्मा के प्रवेश करने की आशा कर सकते हैं? यह सारा

कूड़ा-करकट मन से आता है जो इंसान के शरीर को गंदा करता है। जिनका दिल साफ है उन्हें आर्शिवाद है कि वे परमात्मा को देख पाएंगे। परमात्मा गंदे घर में प्रवेश नहीं करता। बल्ब के अंदर प्रकाश है अगर वह बल्ब काले धब्बों से ढ़का है तो क्या आप रोशनी देख सकेंगे? हमारा जीवन सच्चा होना चाहिए।

गुरु आपको सीधा परमात्मा के पास पहुँचने का रास्ता देते हैं। वे आपके बाहरी रीति-रिवाज, रूप बल या बाहरी जीवन जीने के तरीके को नहीं छूते। वे आपको आपके सामाजिक शरीर में रहने देते हैं। एक बार कुछ लोगों ने हमारे गुरु महाराज सावन सिंह से पूछा कि आप नया धर्म क्यों नहीं शुरू करते? महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''पहले ही बहुत कुएं खुदे हुए है मैं एक नया कुआँ क्यों खोदूं?''

सभी गुरुओं के सिखाने का आधार एक ही है। गुरु कोई नया धर्म नहीं बनाते, सबसे प्यार करते हैं। वे किसी धर्म, संप्रदाय, पूर्व या पश्चिम के एकाधिकारी नहीं होते। वे सारे संसार के लिए आते हैं। जैसे सूरज सारे संसार को रोशनी देता है उसी तरह उनकी शिक्षा सीधी और स्पष्ट होती है। वे आपको शरीर से ऊपर उठाते हैं आपकी अंदर की आँख खोलते हैं जिससे आप परमात्मा का प्रकाश देख सकें। वे पहले हमें यही पूंजी देते हैं कि हमने शरीर तो छोड़ना ही है, वे हमें शरीर छोड़ने का तरीका बताते हैं।

अगर आप हर रोज अभ्यास करते हैं तो आप शरीर छोड़ते समय खुश होंगे क्योंकि आप जानते हैं कि शरीर को कैसे छोड़ना है? सारी चमक और खूबसूरती आपके अंदर है। गुरु आपको बाहर के रीति-रिवाज या नया धर्म नहीं बताते। वे यही कहते हैं कि परमात्मा आपके अंदर रहता है और वह गुरु है। शुरूआत में गुरु

आपको कुछ दे सकता है और आपको इंसानी मायाजाल से निकाल सकता है जिससे आप खुद देख सकें आपको अपने जीवन के अंत तक इंतजार करने की जरूरत नहीं।

हमारे दिल में उनके लिए इज्जत है जिनके चरणों में बैठकर हमने कुछ सीखा है, वह गुरु है। गुरु ने परमात्मा को देखा है वह हमें परमात्मा दिखा सकता है इसके लिए सच्चे जीवन की जरूरत है। आपने पहला कदम उठा लिया है आपका अगला कदम उसके चरणों में है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मेडिटेशन टाक

जामा इंसान ऐ अमुल्ला लाल ओऐ,
मिट्टी च ना रोलीं, रख लईं संभाल ओऐ,
नाम जप गुरां दा ते सुख पावेंगा, गुरु तों बगैर नरकां नूं जावेंगा, (2)

1. वडे–वडे ऐत्थे, अवतार धार गए,
मिल गया गुरु, कारज सवार गए, (2)
जे मिलया ना गुरु, फेर पछोतावेंगा, गुरु तों बगैर .....

2. सुपने दी न्याईं, सारे सुख माया है,
ढलदा परछावां[4], बद्दलां दी छाया है, (2)
इक दिन ऐत्थे सारे, छड जावेंगा, गुरु तों बगैर .....

3. नाम नूं भुलाके, बणी ना कंगाल ओऐ,
सच्चा नाम जप, हो जा मालोमाल ओऐ, (2)
सच्चखंड विच जा के, सुख पावेंगा, गुरु तों बगैर .....

4. बानी गुरु ग्रंथ, विच सच लिखया,
गुरु तों बगैर, औंदी ना कोई सिक्खया, (2)
सच्चा गुरु मिले, मुक्ति नूं पावेंगा, गुरु तों बगैर .....

परमात्मा ने हमें इंसानी जामा दिया है। इंसानी जामें का यही फायदा है कि जो काम हम पशु-पक्षी के जामें में नहीं कर सकते वह काम इंसानी जामें में कर सकते हैं; वह परमात्मा की भक्ति और परमात्मा का प्यार है। हमारी आत्मा सतवंश परमात्मा की पुत्री अपने राजघराने को भूल गई है। यह परमात्मा को भूलकर मन के साथ दोस्ती करके पापों के भार के नीचे दब चुकी है।

जैसे-जैसे हमारी आत्मा परमात्मा से दूर होती गई इसके ऊपर स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीन पर्दे भी चढ़ गए हैं। अब इसे

यह नहीं पता कि मेरा घर कौन सा है? परमात्मा ने जब इस आत्मा को पापों के नीचे दबा हुआ देखा तो वह सन्त रूप धारण करके इस संसार में आया और उसने खुद अपना भेद बताया। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

सन्तरूप होए जग में आया, अपना भेद आप उस गाया।।

जैसे-जैसे हम गर्मी से बचने के लिए पहाड़ के नजदीक जाते हैं गर्मी दूर हो जाती है इसी तरह जैसे हम सतगुरु से प्यार करते हैं तो सतगुरु का प्यार दुनिया का प्यार छोड़ने में हमारी मदद करता है। सन्त हमारे प्यार के भूखे नहीं वह खुद अपने गुरु के प्यार में लगे होते हैं। जिसने भी फायदा उठाया सन्तों के साथ प्यार करके ही उठाया क्योंकि ऐसे हम दुनिया का प्यार नहीं छोड़ सकते और हम दुनिया की मौहब्बत से ऊपर नहीं उठ सकते।

मुझे खुशी है कि आप घरों के बहुत सारे बंधन काटकर घरों की जिम्मेवारियां कुछ दिनों के लिए छोड़कर परमात्मा की याद में इकट्ठे हुए हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप जिस मकसद के लिए यहाँ बैठे हैं उसी के मुत्तलिक सोचें। सन्त हमें जो सिमरन देते हैं उसमें उनका तप, त्याग और चार्जिंग काम करता है। वे हमें सुना सुनाया या किताबों में से पढ़कर सिमरन नहीं देते। उन्होंने जो खुद प्रेक्टिकल किया होता है हमें वही बताते हैं।

जब हम सन्तों का दिया हुआ सिमरन लगातार करते हैं अपने फैले हुए ख्यालों को आँखों के पीछे लाते हैं फिर हमें ध्यान की जरूरत पड़ती है नहीं तो हमारी रूह नीचे आ जाएगी। जब हम तीसरे तिल पर पहुँचकर लगातार सन्तों के स्वरूप का ध्यान करते हैं तो आत्मा ठहरनी शुरू हो जाती है तब सेवक अपने आपको

बाबा जी की फुल पेज फोटो

भूल जाता फिर गुरु और सेवक एक बन जाते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

आप छोड़ गुरु माहे समाए।

हम सिमरन के जरिए ही गुरु स्वरूप तक पहुँच सकते हैं। जब अभ्यासी लगातार सिमरन करता है अपने आपको भूल जाता है तब उसे गुरु ही याद होता है फिर हम सूरज, चंद्रमा, सितारे पार कर जाते हैं। आगे गुरु का स्वरूप प्रकट हो जाता है वहाँ जाकर ही सच्चा शिष्य बनता है तब शिष्य की ड्यूटी खत्म हो जाती है फिर गुरु एक मंडल से दूसरे मंडल को शब्द के जरिए पार करवाता है। यहाँ पहुँचे हुए शिष्य को गुरु कहता है, ''तू शब्द की डोर को पकड़।'' क्योंकि आत्मा ने ये मंडल शब्द पर सवार होकर पार करने होते हैं। यहाँ पहुँचकर ही शिष्य के अंदर सच्चा प्यार जाग जाता है और गुरु के लिए सच्ची मौहब्बत जाग पड़ती है।

शिष्य अपनी आँखों से देख लेता है कि अंदर उसके लिए गुरु क्या कर रहा है? यहाँ पहुँची हुई आत्मा खुशी नहीं बता सकती अगर बताती है तो तरक्की रुक जाती है। जब आत्मा यहाँ तक पहुँच जाए तो उसे रूहानियत को इस तरह छिपा लेना चाहिए जिस तरह औरत अपने बदन को छिपाती है।

सितम्बर के ग्रुप में राजस्थान में दस दिन का प्रोग्राम रखा गया था। इस प्रोग्राम में एक आत्मा ने अभ्यास में बहुत तरक्की की अंदर गुरु स्वरूप के दर्शन किए तो वह बहुत खुश हुआ। उसने अंदर जो देखा वह अपने ग्रुप लीडर को बता दिया। सतगुरु ग्रुप लीडर उसे बनाता है जिसे कुछ देना होता है लेकिन वह ग्रुप लीडर अभ्यास नहीं करता था। बहुत से ग्रुप लीडर सुस्त हो जाते हैं मान-

बड़ाई में रह जाते हैं अभ्यास नहीं करते। उस ग्रुप लीडर के दिल में जलन हुई कि मैंने तो इससे कई साल पहले नाम लिया है, यह बाद में नाम लेकर इतनी तरक्की कर रहा है। उस बेचारे की तरक्की रूक गई, उसने मेरे पास आकर बहुत पछतावा किया।

हमारे देखने का वाक्या है कि महाराज सावन सिंह जी के समय में एक नामलेवा लड़की ने बहुत तरक्की की। उसने अपनी तरक्की के बारे में किसी को बता दिया। वह महाराज सावन सिंह जी के सामने खड़ी होकर रोने लगी कि मैंने जो कुछ प्राप्त किया था वह सब कुछ गायब हो गया है क्योंकि मैंने अंदर का भेद किसी को बता दिया। महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''अगर हम किसी हब्शी को शीशा दिखाएं तो वह उस शक्ल को देखकर शीशा तोड़ देगा। अब तुझे मेहनत करनी होगी आगे किसी को मत बताना। हमें इस तरक्की को अपने अंदर जज्ब कर लेना चाहिए।''

जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र होते हैं, हमें जिस चीज की खोज है हम जिस चीज के लिए बैठते हैं वह हमें अंदर से ही मिल जाती है। हर एक ने मन को शान्त करना है। अभ्यास पर सब कुछ भुलाकर बैठें। मन में जो संकल्प-विकल्प उठ रहे हैं उनकी तरफ और बाहर की आवाज की तरफ ध्यान न दें।

हर व्यक्ति अपने-अपने काम में मशगूल है। हमारा भी फर्ज बनता है कि लोगों के काम की तरफ तवज्जों ने दें, मन को बाहर भटकने न दें। हमने अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है अभ्यास को बोझ मत समझें प्रेम-प्यार से करें। हाँ भई! बैठो अभ्यास करो।

***

धन्य अजायब

आश्रम प्रोग्राम

मार्च-

अप्रैल-